हर औरत के नाम

रुको, ठहरो और सुनो
हमारी शक्ति की आवाज़
हृदय की मौन पुकार
हम सक्षम हैं, सक्षम हैं, सक्षम हैं।
कोटि कोटि हाथों की ताकत में
जोड़ दो
अपनी ताकत
आने दो ज्वार बदलाव का
बढ़ती चलो, आगे
नये वक्त
नई जगह
अपने ही बनाये नये युग की ओर।
खिलने दो क्रोध के फूल
बिखरने दो अंगारे
कुचल दो सख्ती से
उस अन्याय को
भोगती आई हैं जिसे
सब औरतें
और दलित वर्ग सारे।

अनुवादिका : वीणा शिवपुरी